## 13–सुधा ओम ढींगरा–अनुत्तरित

दरवाजे पर ही वह ठिठक गया । बंद दरवाजा खोल नहीं पाया । अन्दर से बॉस की फोन पर किसी से बातें करने की आवाज़ आ रही थी ।

''सर, कंपनी को परम्परावादी तरीके से चलाने वाला लीडर चाहिए और जॉन वाइट, वह कजेर्वेटिव नहीं, बहुत आजाद प्रवृत्ति का है। सर वह कैथोलिक भी नहीं।

'नहीं सर, रिपब्लिकन नहीं.... मुझे तो अभी–अभी पता चला, वह डेमोक्रेट है। जी...जी समझ गए आप.... उदारवादी व्यक्ति देश और कंपनी नहीं चला सकता।

'बॉब कॉलड्वेल..नहीं सर..वह पहले ही अफ्रीकन माइनर होने से काफी पदोन्नति ले चुका है। तरक्की के लिए अब उसे कुछ वर्ष इंतजार करने दें। सर, अपने बुजुर्गों की कुर्बानी को ये लोग कैश करना चाहते हैं।'

'जूली गूजो....सर यहाँ भी वही बात है महिला होने का लाभ ले रही है। बॉब और जूली दोनों इस पद के काबिल नहीं ।'

'और सुमीत...

अपना नाम सुन कर वह सतर्क हो गया।

'सर, एशियंस खास कर भारतीयों को पद देने की जरूरत नहीं होती, हर साल वेतन थोड़ा बढ़ा दें, अच्छा बोनस दे दें और बस पद का लालच...दस लोगों का काम कर देंगे । बहुत मेहनती होते हैं । जी...जी सर, सुमित के लिए यह सब सुविधाएँ मैं अपने बजट से कर सकता हूँ।'

'सर, हटा दें इस पद को। यह बड़ी महँगी पोजीशन है, कंपनी के खर्चे बहुत बढ़ जाएँगे और काम तो सुमीत से करवा लेंगे, मुझ पर छोड़िए।'

उसे लगा, उसका शरीर शून्य में लटक रहा है। देश की विसंगतियों से भागकर वह यहाँ आया था। अब वह भागकर जाए तो कहाँ जाए .....